लखानी से वसूली के अदालती आदेश को लागू कराने की जद्दोजहद की अपडेट

गौंछी नायब तहसीलदार दफ़्तर का निकम्मापन सामने आया

क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा

लखानी के 2 मज़दूरों रजनीश एवं भूपेन्द्र की ग्रेच्युटी की रक़म की वसूली के मुक़दमे में सहायक श्रम आयुक्त की अदालत द्वारा पारित आदेश को लागू कराने में फ़रीदाबाद प्रशासन की नाकामी के विरुद्ध "लखानी मज़दूर संघर्ष समिति" द्वारा 16 अक्टूबर से आंदोलन छेड़ने की चेतावनी दी गई थी। ये ख़बर पिछले सप्ताह मज़दूरों के चहेते साप्ताहिक 'मज़दूर मोर्चा' में छपी थी। ख़ुशी की बात है कि प्रशासन के कान में जूं रेंगी। शुक्रवार 13 अक्तूबर को नायब तहसीलदार गौछी के दफ़्तर में मीटिंग हुई। उन्होंने कहा, "एक हफ़्ते का वक़्त दो मैं लखानी से वसूली कराऊंगा। उन्होंने सम्बंधित कर्मचारी को उसी वक़्त सख़्ती से कहा कि शनिवार 14 तारीख को छुट्टी के दिन ही वे पुलिस के साथ वसूली के लिए जाएं। "लखानी मज़दूर संघर्ष समिति" ने कहा कि एक सप्ताह नहीं आप पूरे 10 दिन लीजिए लेकिन लखानी से वसूली कराइए।

फ़रीदाबाद ज़िले के वसूली विभाग ख़ासतौर पर गौंच्छी नायब तहसीलदार कार्यालय का हमारा पिछले 2 महीने का तजुर्बा बता रहा था कि भले नायब तहसीलदार ने एक हफ़्ते में वसूली कराने का भरोसा दिया है लेकिन हमें इस मुद्दे को ढीला नहीं छोड़ना चाहिए। जिस बाबू को नायब तहसीलदार ने शनिवार छुट्टी के दिन वसूली कराने के लिए बोला था वह सोमवार 16 तारीख को भी वसूली कराने की ओर एक क़दम भी बढ़ाने को तैयार नहीं था। 'सारे नोटिस तैयार हैं लेकिन मेरी दादी ख़तम हो गई हैं मुझे वहां जाना है और जैसे ही उनकी क्रिया विधि (अर्थात तेरहवीं) करा के लौटूंगा लखानी से वसूली करने निकल जाऊंगा'। हम उसके मुंह की तरफ़ देखते रह गए!! ज़िला कलेक्टर और जिला वसूली अधिकारी के दस्तख़त से जारी वसूली का आदेश अर्थात आरसी इस दफ्तर में प्राप्त हुए दो महीने हो गए और अभी तक वसूली का नोटिस भी लखानी तक नहीं पहुंचा है। ये बात नायब तहसीलदार को भी मालूम है। मतलब छुट्टी के दिन वसूली के लिए जाने वाली बात, हमें झूठी तसल्ली देने के लिए की जा रही थी।

गौंच्छी नायब तहसीलदार दफ़्तर की दो विशिष्टताएं हैं जिनसे पार पाना आसान नहीं। पहली; देश के किसी भी अधिकारी, मंत्री, प्रधानमंत्री का ये पता चल सकता है कि वे कब उपलब्ध होंगे लेकिन नायब तहसीलदार कब आएंगे, आएंगे भी या नहीं, कहां हैं, ये पता लगाना संभव नहीं। उनकी इसी विशिष्टता के सताए हुए सैकड़ों लोग हर रोज़ इस दफ्तर में भटकते-भटकते हताश होकर बैठ जाते हैं। दूसरी ख़ासियत; कोई भी पटवारी/कर्मचारी रिश्वत ग्रहण किए बगैर अपनी कुर्सी से नहीं उठता। ज़िले अथवा राज्य के किसी भी अधिकारी के किसी भी आदेश को वे अपने रिश्वत लेने के अधिकार से ऊपर नहीं मानते। पैसे पकड़ाए जाने का कोई संकेत दिए बगैर जब उनसे किसी काम को कहा जाता है तब उनके चेहरे पर ये भाव स्पष्ट नज़र आते हैं; 'कैसा आदमी है पैसे की बात नहीं और काम को कह रहा है, इस दफ़्तर का दस्तूर नहीं जानता!!' नायब तहसीलदार द्वारा हफ़्ते भर में वसूली कराने का आश्वासन जान बूझकर बोला गया झूठ है, टरकाने की क़वायद है साबित हो गया।

यही वजह थी कि 'लखानी मज़दूर संघर्ष समिति' की टीम 19 अक्टूबर को लघु सचिवालय स्थित बड़खल तहसीलदार से मिली और उन्हें लिखित शिकायत दी कि आरसी कटने के 2 महीने बाद भी गौंच्छी नायब तहसीलदार कार्यालय से वसूली का नोटिस अभी तक 'लखानी फुटवेयर प्रा लि, 264, सेक्टर 24 फ़रीदाबाद तक नहीं पहुंचा है। उनकी प्रतिक्रिया दिलचस्प थी 'पहली बात, मैं बड़खल का तहसीलदार नहीं हूं, मेरे पास तो बड़खल तहसील का एडिशनल चार्ज है। दूसरी बात, गौंच्छी नायब तहसीलदार मेरे मातहत नहीं है उसके पास स्वतन्त्र कार्यभार है'। एडिशनल चार्ज होने का क्या मतलब है? फिर बड़खल तहसीलदार कौन है? तहसीलदार महोदय को जब लगा कि ये लोग टलने वाले नहीं हैं तब जाकर हमारा लेटर हमें थमाते हुए बोले 'ठीक है, दफ़्तर में रिसीव करा लो'। दफ्तर के निकम्मेपन का ये आलम है कि उन के कहने के बाद भी लेटर रिसीव कराने के लिए 15 मिनट जिरह करनी पड़ी।

'मोर्चा', लखानी में काम कर चुके मज़दूरों के ख़ून पसीने की कमाई का एक-एक पैसा, लखानी से ब्याज सहित वसूलने की ज़द्दोज़हद को क़ामयाबी मिलने तक जारी रखेगा। निकम्मे, भ्रष्ट और ग़ैर-ज़िम्मेदार अधिकारियों को उनकी ज़िम्मेदारियों का अहसास हर रोज़ कराएगा। उनकी नींद हराम करता रहेगा। हमें न टरकाया जा सकता है और न भटकाया जा सकता है। हमें, हमारा फ़र्ज़ याद है। 25 अक्टूबर तक अदालत के आदेशानुसार ब्याज सहित पूरी रक़म लखानी के खाते से निकलकर रजनीश तथा भूपेन्द्र के खातों में पहुंच जानी चाहिए। अगर ऐसा नहीं हुआ तो हम बहुत अदब के साथ लेकिन पूरी दृढ़ता के साथ फ़रीदाबाद प्रशासन से कहना चाहते हैं कि 26 अक्टूबर से डीसी कार्यालय पर सतत आक्रोश आंदोलन शुरू होगा, जो वसूली होने के बाद ही समाप्त होगा।

क्रांतिकारी वीरांगना दुर्गा भाभी के स्मृति दिवस पर 'दुर्गा भाभी महिला मोर्चा' ने सभा की

आज़ादी आंदोलन की गौरवशाली क्रांतिकारी धारा 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' की बहुत अहम सक्रिय सदस्य दुर्गावती वोहरा, जिन्हें सारा देश बहुत अदब-ओ-एहेतराम के साथ 'दुर्गा भाभी' के नाम से जानता है, की मृत्यु 15 अक्टूबर 1999 को गाज़ियाबाद में हुई थी। औपनिवेशिक लुटेरी अंग्रेज हुकूमत के साथ ही देश की मेहनतकश अवाम को आर्थिक शोषण और ज़िल्लत से आज़ादी दिलाने के लिए जिन वीरों ने अपनी जानें क़ुर्बान कर दीं उन्हें सम्मानपूर्वक याद करना और उनके बताए रास्ते पर चलने का अहद लेना हर विवेकशील देशवासी का कर्तव्य है, क्योंकि उन महान शहीद क्रांतिकारियों का मिशन अभी अधूरा है। अपने इसी फ़र्ज़ को शिद्दत से निभाते हुए 'दुर्गा भाभी महिला मोर्चा' की फ़रीदाबाद इकाई ने 'दुर्गा भाभी' के 24 वें स्मृति दिवस पर मज़दूर बस्ती, आज़ाद नगर में 15 अक्टूबर को 2 बजे एक शानदार सभा का आयोजन किया।

सभा में लगभग 60 महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिसका संचालन स्कूली छात्रा स्वाती ने किया। इस सभा में महिलाओं ने क्रांतिकारी मज़दूर मोर्चा के कार्यकर्ताओं साथी नरेश, सत्यवीर सिंह, मुकेश, चंदन, अशोक और बबलू को भी अपने विचार रखने के लिए आमंत्रित किया था। दुर्गा भाभी महिला मोर्चा की अग्रणी कार्यकर्ताओं साथी रिम्पी, कविता, रेखा, बबंती, सुनीला ने क्रांतिकारी आज़ादी आंदोलन में दुर्गा भाभी के साहसिक और प्रेरणादायक योगदान को याद किया। गोरे अंग्रेज़ तो खदेड़ दिए गए, औपनिवेशिक गुलामी की ज़िल्लत से तो मुक्ति मिल गई लेकिन उन गोर अंग्रेज़ों की जगह भूरे रंग के देसी अंग्रेज़ों से जो मज़दूरों-मेहनतक़श किसानों का ख़ून निचोड़ने में अंग्रेज़ों से भी कहीं आगे हैं पिंड छुड़ाना अभी बाक़ी है। अंग्रेज़ों को तो उनकी चमड़ी के रंग से दूर से पहचाना जा सकता था लेकिन आज के पूंजीपति लुटेरे और उनकी ताबेदार सरकारें चलाने वाले उनके मैनेजर तो बिलकुल हमारे जैसे ही दिखते हैं। इन्हें पहचानना बहुत मुश्किल है।

औपनिवेशिक-सामंती गठजोड़ सत्ता के शोषण से मुक्ति पाने के लिए जो राष्ट्र की भावना जागृत हुई थी, जिस राष्ट्रवाद के नारे से इतना विशाल देश इकठ्ठा हुआ था, मोदी सरकार पूरी निर्लज्जता के साथ राष्ट्र के उसी मुक़द्दस जज़्बे राष्ट्रप्रेम को अपने आक़ाओं अडानी-अंबानी की दौलत के पहाड़ और विशाल-विकराल करने में कर रही है। दरअसल, प्रतिष्ठित साप्ताहिक 'मज़दूर मोर्चा' में छपे लेख 'देश की गौरवशाली महिला क्रांतिकारी वीरांगना, दुर्गा भाभी को लाल सलाम' की प्रतियां महिलाओं ने आज़ाद नगर बस्ती में बांटी थीं। सभी को मालूम था कि सच्ची आज़ादी के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर करने वाले जांबाज़ कौन थे और आज़ादी आंदोलन के हीरो के रूप में किन्हें प्रस्तुत किया जाता है।

इतना ही नहीं जिस हिन्दू महासभा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने अंग्रेज़ों की मुखबरी की, जिनके 'वीरों' ने बार-बार माफ़ीनामे लिखे, अंग्रेज़ों की पेंशन पाने के लिए उनकी गुलामी करने के वचन दिए, जिनका इतिहास शर्मनाक है, वे आज राष्ट्रवाद के विचारक होने की ऐंठ में देशभक्ति के सर्टिफिकेट बांटते फिर रहे हैं।

सभा, मज़दूर बस्ती के बीच एक पुराने दरख़्त के नीचे हो रही थी जिसके चारों ओर मज़दूरों की छोटी-छोटी झोपडियां थीं, जिनमें पूरे के पूरे परिवार रहते हैं। वक्ताओं ने, इस हक़ीक़त को सामने लाते हुए कहा कि सुई से ज़हाज़ तक और अनाज से ताज तक सारे का सारा उत्पादन और निर्माण करने वाले मज़दूर ऐसे नरक में रहने को मज़बूर हैं। इन बस्तियों को भी तोड़ डालने के मंसूबे पाले जा रहे हैं। दूसरी तरफ़ इन्हीं मज़दूरों के श्रम को हड़प जाने वाले मुफ्तखोर, सरमाएदार लखानी-चोपड़ा एकड़ों तक फैले महलों में ऐश करते हैं। यहां मज़दूर एक-एक बूंद पानी को संघर्ष करते हैं और वहां निजी स्वीमिंग पूल हैं बड़े-बड़े गार्डन हैं। ये अन्याय भी एक दिन ये मज़दूर ही मिटाएंगे। कमेरों की असली आज़ादी उसी दिन आएगी जिस दिन पूंजी की गुलामी से मुक्ति मिलेगी, श्रम का सम्मान होगा। सारे के सारे उत्पादन पर उत्पादन करने वाले का अधिकार होगा।

महान क्रांतिकारी वीरांगना के विचारों और ज़ज़्बे को मज़दूर नगरी फ़रीदाबाद के कोने-कोने में ले जाने 'दुर्गा भाभी महिला मोर्चे' को मेहनतक़श महिलाओं के सम्मान और संघर्षों के औज़ार के रूप में मज़बूत करने के अहद और बुलंद क्रांतिकारी नारों के साथ सभा का समापन हुआ।

खाऊ कमाऊ अधिकारियों ने...

पेज एक का शेष

श्याम सुंदर कपूर बनवा रहे हैं। संदर्भवश बताते चलें के ये कपूर बंधु कुछ समय पहले ही भाजपा में शामिल हुए हैं और इनके संबंध केंद्रीय मंत्री किशनपाल गूजर से लेकर मंत्री मूचलचंद शर्मा, जिलाध्यक्ष गोपाल शर्मा सहित अन्य विधायक मंत्रियों से प्रगाढ़ हैं। अजीत जाखड़ का आरोप है कि वह सरकारी जमीन पर अतिक्रमण और अवैध निर्माण कर रही इस कंपनी की कई बार शिकायत कर चुके हैं लेकिन कोई कार्रवाई नहीं होती।

हाल ही में उन्होंने इसकी शिकायत सीएम फ्लाइंग में की थी। उन्होंने अवैध निर्माण की सूचना एसडीओ विनोद कुमार और जेई करन रावत को देने के साथ ही हर घंटे पर निर्माण कार्य की प्रगति की फोटो भी भेजी। आरोप है कि एसडीओ ने बिना मौका मुआयना किए ही बता दिया कि काम बंद करवा दिया गया है, जबकि निर्माण कार्य लगातार जारी था। अजीत सिंह के अनुसार राजनेताओं की शह पर अधिकारी मोटा पैसा खाकर अवैध कब्जा करवा रहे हैं।

उनकी शिकायत पर सोमवार को सीएम फ्लाइंग स्क्वाड नगर निगम का तोड़फोड़ दस्ता लेकर मौके पर पहुंचा। नियमानुसार सरकारी जमीन पर अतिक्रमण और अवैध कब्जे को तोड़ा जाता है लेकिन भूमाफिया का नमक खाने वाले अधिकारियों ने नमक हलाल होने का परिचय देते हुए फैक्ट्री के मुख्य गेट पर लगे ताले पर सील मार दी और एक नोटिस चस्पा कर लौट गए। इन 'ईमानदार' अधिकारियों ने जानबूझ कर फैक्ट्री के अन्य रास्तों को सील नहीं किया । इसका नतीजा ये हुआ कि फोड़दस्ते के जाने के बाद अंदर और तेजी से निर्माण कार्य होने लगा। अजीत जाखड़ का आरोप है कि सील्ड फैक्ट्री में सोमवार को रात भर निर्माण कार्य हुआ जो मंगलवार को दिन में 11 बजे तक चलता रहा।

दूसरे दिन मंगलवार को तो सील भी अवैध रूप से हटा दी गई और नोटिस भी, अब धड़ल्ले से यहां निर्माण कार्य जारी है। फैक्ट्री मालिक भाजपा का कार्यकर्ता और मंत्रियों का करीबी है साथ ही अधिकारियों को भी मोटी मलाई खिला रहा है, ऐसे में फैक्ट्री बेरोकटोक बनना तय है।

जिस तरह प्रधानमंत्री मोदी अडानी पर जंगल से लेकर आधारभूत संसाधन लुटा रहे हैं उसी तरह केंद्रीय मंत्री किशनपाल गूजर, मुख्यमंत्री खट्टर, मंत्री मूलचंद शर्मा, भाजपा जिलाध्यक्ष पार्टी में नए नए शामिल हुए कपूर बंधुओं पर बेशकीमती सरकारी जमीन लुटवा रहे हैं। सीलिंग की कार्रवाई के तीसरे दिन खट्टर शहर में आए थे, अगर वह ईमानदार होते तो अधिकारियों को तलब कर सरकारी जमीन से अवैध कब्जा हटवाने का सख्त आदेश देते, लेकिन ऐसा करने पर उनके खजांची के हाथ से मोटा चंदा देने वाली पार्टी फिसल जाती और चुनाव की घोषणा होने में अब कुछ ही महीने बचे हैं, ऐसे में पार्टी विद डिफरेंस के सीएम धनपशुओं को मनमानी करने की छूट दिए हुए हैं ताकि चुनाव में उनकी पार्टी को पैसे की कोई कमी न हो।

जानकार बताते हैं कि पूरन कपूर कोई खानदानी भाजपाई नहीं है, जो भी पार्टी सत्ता में रहती है ये उसके साथ हो कर फायदा उठाते हैं। फिलहाल तो ये भाजपा में रहकर मलाई खा रहे हैं, भविष्य में यदि कोई दूसरी पार्टी सत्ता में आई तो ये उसके साथ हो लेंगे। यानी सत्ता में कोई भी हो इन कपूर बंधुओं का काम इसी तरह चलता रहना है।